y[kd %& x.k'k flg [kUu ioDrk jkt0 foKku cki jk0b0dk0 ukjk;.kuxj

d{kk &XII A

jktuhfr foKku

o'ohdj.k

v/;k; lkj

विचार ,पूँजी ,वस्तु, सेवाओं का विश्वव्यापी प्रवाह वैश्वीकरण कहलाता है ।

वैश्वीकरण एक बहुआयामी अवधारणा है इसके राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आयाम है।

यद्यपि वैश्वीकरण की उत्पत्ति के लिए सिर्फ कोई एक कारण उत्तरदायी नही है ,फिर भी सूचना प्रौद्योगिकी एवं लोगों की सोच में विश्वव्यापी जुडाव का बढना महत्वपूर्ण कारण है ।

वैश्वीकरण के कारण राज्य की क्षमता में कमी आयी है । लोक कल्याणकारी राज्य के स्थान पर अब बाजार आर्थिक और सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रमुख निर्धारक है ।

वैश्वीकरण के कारण सम्पूर्ण विश्व में वस्तुओं के व्यापार में वृद्वि हुई है

कुछ अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक वैश्वीकरण को विश्व के पुनः उपनिवेशीकरण की संज्ञा दी है ।

भारत ने सन 1991 में वित्तीय संकट से उबरने एवं उच्च आर्थिक वृद्वि दर प्राप्त करने के लिए आर्थिक सुधारों की प्रक्रिया प्रारम्भ की ।

वर्ल्ड सोशल फोरम (w s f) – वैश्वीकरण के प्रतिरोध या विराध के लिए यह संगठन अस्तित्व में आया । इस मंच के तहत मानवाधिकार कार्यकर्ता ,पर्यावरणवादी ,मजदूर ,युवा एवं महिला कार्यकर्ता एकजुट होकर नव उदारवादी वैश्वीकरण का पुरजोर विरोध करते है ।

वर्ल्ड सोशल फोरम की पहली बैठक 2001 में ब्राजील के पोर्टो अलगेरे में हुई ।

भारत में वर्ल्ड सोशल फोरम ,की चौथी बैठक सन् 2004 में मुंबई में हुई ।

<u>वैश्वीकरण</u>& %

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होता है । उसकी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति समाज में ही होती है । वह अकेला रहकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति नही कर सकता है । उसी प्रकार आज वैश्विक वातावरण में कोई देश (राज्य) बिना दूसरे देशों से व्यापार या सम्पर्क किए अपनी समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति नही कर सकता है। विश्व में नित –प्रतिदिन नये–नये अनुसंधान हो रहे हैं उनका फायदा दूसरे देशों को तभी मिल सकता है जब वे देश आपस में सम्पर्क में रहेगें । इन्हीं अवधारणाओं की वजह से वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण सम्भव हो पाया है ।

जब कोई देश अन्य राष्ट्रों के साथ वस्तु , सेवा ,पूँजी तथा बौद्विक सम्पदा आदि के बिना किसी प्रतिबन्ध के परस्पर आदान प्रदान करता है तो इसे वैश्वीकरण या भूमण्डलीकरण कहते है । वर्तमान आधुनिक समय में संचार क्रान्ति ने पूरी दुनिया की दूरियॉ कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया है । इसी वजह से सम्पूर्ण विश्व एक गॉव में परिवर्तित हो गया है विश्व में संचार क्रान्ति की प्रभावशाली भूमिका के कारण एक नयी विचारधारा का आगाज हुआ है , जिसे हम वैश्वीकरण नाम से जानते है ।

वैश्वीकरण की बुनियादी बात है – प्रवाह। प्रवाह कई तरह के होते हैं , जैसे – वस्तु प्रवाह, पूँजी प्रवाह ,व्यापार प्रवाह ,विचार प्रवाह और आवाजाही प्रवाह आदि । इन सब प्रवाहों की निरन्तरता से विश्वव्यापी पारस्परिक जुड़ाव उत्पन्न हुआ है। इन्ही सब घटनाओं को वैश्वीकरण कहते हैं ।

o'ohdj.k ds dkj.k &%

वैसे तो वैश्वीकरण के अनेक कारण है जिनमें से प्रमुख कारणों का वर्णन निम्नलिखित शीर्षकों के माध्यम से किया जा सकता है ।

1- ikS|ksfxdh dk fodkl %&

वैश्वीकरण की उत्पत्ति के कारणों मे प्रौद्योगिकी का योगदान सबसे महत्वपूर्ण है । आज टेलीग्राफ ,टेलीफोन मोबाइल फोन व माइक्रोचिप ने विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में संचार की क्रान्ति उत्पन्न कर दी है । प्राचीन समय में जब मुद्रण की तकनीक आयी थी तो उसने राष्ट्रवाद की आधार शिला रखी । इसी प्रकार आज प्रौद्योगिकी के विकास ने हमारी जीवन शैली को ही बदल कर रख दिया है । प्रौद्योगिकी में हुई उन्नति के कारण से ही आज विश्व में विचार, वस्तु ,पूँजी और व्यक्तियों के विश्व के विभिन्न भागों में आवागमन या प्रवाह की सुगमता सम्भव हो पायी है । प्रौद्योगिकी की सहायता से आज भौगोलिक दूरियां कोई मायने नही रखती । मिनटों में कोई भी व्यक्ति अपने सगे सम्बन्धियों से सम्पर्क स्थापित कर सकता है ।

2-fo'o0;kih ikjLifjd tqMko dk c<uk %&

विश्वव्यापी पारस्परित जुड़ाव का बढ़ना भी वैश्वीकरण के प्रमुख कारणों में शामिल है । विश्वव्यापी प्रवाहों की निरन्तरता से लोगों में विश्वव्यापी पारस्परित जुड़ाव उत्पन्न हुआ है । इसी जुड़ाव की वजह से वैश्वीकरण की प्रकिया में तीव्रता आयी है विश्व के किसी भी हिस्से में निवास कर रहे लोगों का विश्वास है कि वो एक –दूसरे से जुडे है। किसी भी देश या भू–भाग में कोई आर्थिक घटना घटित होती है तो उसका प्रभाव अन्य देशों में भी होता है । सुनामी एवं बर्ड फ्लू जैसे खतरे किसी एक राष्ट्र की सीमाओं में सिमटे नही रहते । ये घटनाएँ राष्ट्रीय सीमाओं का पालन नही करती है । इसका प्रभाव विश्व के अन्य देशों में भी पड़ता है।

o'ohdj.k d iHkko

o'ohdj.k d jktuhfrd iHkko %&

वैश्वीकरण के राजनीतिक प्रभावों को निम्नलिखित बिन्दुओं से स्पष्ट किया जा सकता है –

1&o'ohdj.k }kjk dN {k=k e jkT; dh 'kfDr dk detkj djuk %& वैश्वीकरण की वजह से राज्य सत्ता की शक्तियों में कमी आयी है जिनका विवरण निम्नवत है

(अ) न्यूनतम हस्तक्षेपकारी राज्यकी धारणा को अपनाया जाना

(ब) बाजार द्वारा आर्थिक व सामाजिक प्राथमिकताओं का निर्धारण

(स) बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के प्रभाव में वृद्वि ।

2&dN {k=k e jkT; dh 'kfDr ij o'ohdj.k dk dkb iHkko ugh %&

वैश्वीकरण की वजह से राज्य के हर क्षेत्र में राज्य –शक्ति में कमी आती है यह कथन असत्य है । राजनीतिक समुदाय के आधार के रूप में राज्य की प्रधानता को वैश्वीकरण से कोई चुनौती नही मिली है । आज भी राज्य कानून और व्यवस्था तथा राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे अनिवार्य कार्यो को पूर्ण कर रहें है।

3&-o'ohdj.k }kjk dN {k=k e jkT; dh 'kfDr e of} djuk %&

वर्तमान में सूचना एवं प्रौद्योगिकी में उल्लेखनीय विकास होने की वजह से सरकारों की शक्ति में वृद्वि हुई है । राज्य अपने नागरिकों के बारे में सूचनाएँ ज्यादा आसानी से एकत्र कर पा रहे हैं । तथा

प्रशासनिक कार्यों को भी प्रौद्योगिकी की वजह से ज्यादा कारगर तरीके से करने में सक्षम है ।

o'ohdj.k d vkfFkd iHkko %&

वैश्वीकरण के आर्थिक प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण है । इन प्रभावों को 02 भागों में बॉटा जा सकता है।

¼A½ o'ohdj.k d ldkjkRed vkfFkd iHkko %&वैश्वीकरण के सकारात्मक आर्थिक प्रभावों को निम्नलिखित शीर्षकों से समझा जा सकता है ।

1. वस्तुओं के व्यापार में वृद्धि।
2. पूॅजी के प्रवाह में वृद्वि ।
3. व्यक्तियों के आवागम में वृद्वि ।
4. आर्थिक समृद्धि का बढ़ना ।
5. पारस्परिक जुड़ाव का बढ़ना ।
6. विचारों के समक्ष राष्ट्र की सीमाओं की बॉधा नही ।

¼B½ o'ohdj.k d udkjkRed vkfFkd iHkko %&

वैश्वीकरण के नकारात्मक आर्थिक प्रभाव निम्नलिखित है –

1. विश्व के पुनः उपनिवेशीकरण का भय ।
2. गरीब देशो के लिए अहितकर ।
3. जनता का विभाजन ।
4. सरकारों द्वारा सामाजिक न्याय की अपेक्षा ।

o'ohdj.k d lkLdfrd iHkko %&

वैश्वीकरण के सांस्कृतिक प्रभावों को 02 भागों में बॉटा जा सकता है ।

4&oS'ohdj.k ds ldkjkRed lkaLd`frd iHkko %&

(1) संस्कृति का परिष्कार होना ।

(2) सांस्कृतिक वैभिन्नीकरण ।

(3) पसन्द नापसन्द का दायरा बढ़ना ।

¼B½ oS'ohdj.k ds udkjkRed lkaLd`frd iHkko %&

1. विभिन्न संस्कृतियॉ अपने को अमेरिकी ढर्रे पर ढालने लगी है ।

2. प्रभुत्वशाली संस्कृति द्वारा कम शक्तिशाली समाजो पर अपनी छाप छोड़ना ।

3. पश्चिमी संस्कृति का जबरन थोपा जाना ।

4. पश्चिमी सांस्कृतिक प्रभावों से सामाजिक अपराधों में वृद्दि।

Hkkjr esa oS'ohdj.k %&

भारत भी वैश्वीकरण के प्रभाव से अछूता नही रहा । इसका प्रभाव भारत में भी पड़ा । पुॅजी ,वस्तु, विचार और लोगों की आवाजाही का भारतीय इतिहास कई सदियों का है। औपनिवेशिक दौर में ब्रिटेन के साम्राज्यवादी मंसूबों के परिणामस्वरूप भारत आधारभूत वस्तुओं और कच्चे माल का निर्यातक तथा बने बनाये समानों का आयातक देश था । आजादी के पश्चात हमने सबक लेते हुए अपनी आवश्यकता की सभी चीजों को बनाना शुरू किया तथा अपनें उद्योगों को संरक्षण देने के लिए उपाय भी किये पर इस संरक्षणवाद से कुछ नयी दिक्कतें पैदा हुई । कुछ क्षेत्रों में तरक्की हुई तो कुछ जरूरी क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य आवास और प्राथमिक शिक्षा पर उतना ध्यान नही गया जितने के वे हकदार थे । 1991 में वित्तीय संकट से उबरने और आर्थिक वृद्दि की ऊॅची दर हासिल करने की इच्छा से भारत में आर्थिक सुधार की योजना शुरू हुई । इसके लिए विभिन्न क्षेत्रों से बाधाऍ हटायी गई । निवेश को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया गया । हमारें देश भारत के लिए वैश्वीकरण एक

अभिनव प्रयोग है आगे आने वाले समय में इसे परखने के पश्चात ही निर्णायक रूप से कहा जा सकेगा कि भारत में वैश्वीकरण सफल रहा अथवा नही या इसे बीच में ही छोड़ देना चाहिए ।

o'ohdj.k d iHkko %&

वैश्वीकरण के प्रभावों को 02 भागों में बॉटा जा सकता है ।

¼1½o'ohdj.k d ldkjkRed iHkko %&

1. वैश्वीकरण के कारण प्रतिस्पर्धा होती है । जिससे वस्तुओं की कीमतों में कमी आती है ।

2. वैश्वीकरण से एक ही वस्तु के अनेक उत्पादक हो जाते हैं, जिससे उपभोक्ताओं को विकल्प की सुविधा मिल जाती है।

3. आर्थिक संसाधनों का उचित प्रयोग होने से आर्थिक विकास की दर में वृद्वि भी होती है।

4. अन्र्तराष्ट्रीय व्यापार में वृद्वि होती है।

¼2½o'ohdj.k d cj iHkko %&

1. वैश्वीकरण की प्रकिया से पूॅजीवाद को बढ़ावा मिलता है।

2. मूलभूत उद्योगों में ज्यादा ध्यान न देकर उद्योगपति उपभोक्ता वस्तुओं पर ज्यादा ध्यान देते है।

3. प्रतिस्पर्धा की वजह से राष्ट्रीय हितों को नुकसान पहुॅचता है।

4. इस प्रकार की प्रतियोगिता से आर्थिक असमानता फैलती है । धनी तथा निर्धनों के बीच दूरियां बढ़ती चली जाती है ।

o'ohdj.k dk ifrjks/k %& वर्तमान समय में वैश्वीकरण के प्रतिरोध के अनेक कारण है।

1. वैश्वीकरण से पूंजीवाद फल फूल रहा है। जिससे धनी तथा निर्धनो के बीच खाई बनती जा रही है।

2. वैश्वीकरण से राज्य सत्ता की ताकत में कमी आयी है और उसकी शक्ति में कमी आने की वजह से गरीबों के हितों की रक्षा करने की क्षमता में कमी आती है।

3. राजनीतिक दृष्टि से राज्य कमजोर हो रहे है।

4. वैश्वीकरण से अविकसित देशों में बहुराष्ट्रीय कम्पनियां मनमानी करती है। तथा उनका एकाधिकार चलता है।

5. अधिक ताकतवर देश कमजोर देशों के ऊपर जबरन वैश्वीकरण की प्रक्रिया थोप रहे है। क्योंकि विकसित देशों को बाजार की आवश्यकता होती है।

6. वैश्वीकरण से परम्परागत संस्कृति को क्षति होती है।

7. वैश्वीकरण का लाभ अधिकांश जनता तक नही पहुॅच पाया है। इससे असमानता बढ़ी है।

उपरोक्त सभी कारणों से वैश्वीकरण का तीव्र विरोध या प्रतिरोध किया जा रहा है।

WSF - World Social Forum ¼oYM lk'ky Qkje½ %&

इसकी स्थापना जून 2001 में हुई थी। इसका मुख्यालय ब्राजील के पोर्टो अलगेरे में है।

नव उदारवादी वैश्वीकरण के विरोध के लिये बनाया गया एक विश्वव्यापी मंच है। जिसमें मानवाधिकार कार्यकर्ता, पर्यावरणवादी, मजदूर, युवा और महिला कार्यकर्ता सम्मिलित है। WSF की पहली बैठक ब्राजील के पोर्टो अलगेरे में सन् 2001 में हुई। सन् 2004 में चौथी बैठक मुंबई में हुई। वर्ल्ड सोशल फोरम की अब तक कुल 15 बैठके हो चुकी है। 15 वीं बैठक 2016 में कनाडा के मांट्रियल में हुई।

v/;k; d egRoi.k i'u

1- fo'o0;kih ikjLifjd tMko D;k g \ bld dku & dku l ?kVd g \

2- o'ohdj.k e ik|kfxdh dk D;k ;xnku g \

3- o'ohdj.k dh vkfFkd ifj.kfr;k D;k gb g \ bl lUnHk e o'ohdj.k u Hkkjr ij dl i Hkko Mkyk g \

4- D;k vki bl rd l lger g fd o'ohdj.k l lkLdfrd fofHkUurk c< jgh g \

5-o'ohdj.k d jktuhfrd]lkekftd rFkk lkLdfrd iHkkok dk o.ku dhft,A

6-oYM lk'ky Qkje D;k vfLrRo e vk;k \

7-fo'o d *eDMkukYMhdj.k* l D;k vfHkik; g \

8- Hkkjr e o'ohdj.k dk eY;kdu dhft,A

V;Vj %& x.k'k fl g [kUu ioDrk jkt0 foKku cki jk0b0dk0 ukjk;.kuxjA

b&ey %&**gs330533@gmail.com**